प्रवासी मजदूरों के सांस्कृतिक व्यवहार पर

राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए आलेखों का आमंत्रण

अवधारणा-पत्र

वी.एस. नॉयपाल ने अपने लेख ''ईस्ट इंडियन'' में इसे प्रतिबिम्बित किया है कि बिहार और उत्तर प्रदेश के गिरमिटिया मजदूरों ने अनजान दुनिया में अपने जीवन को कैसे पुनर्निर्मित किया. एक खास उकसानेवाले अंदाज में नॉयपाल कहते हैं कि ''यह जड़ों से उतना कट जाना नहीं था जितना दीखता है'' क्योंकि गिरमिटिया मजदूरों के पास जो कुछ भी था - "बिछावन, पीतल के बरतन, वाद्ययंत्र, तस्वीरें, धार्मिक किताबें, अगरबत्ती, पंचांग - वे सब साथ ले गए, संक्षेप में, संस्कृति और परंपरा के सभी चिन्ह जो उन मजदूरों के जीवन को पारिभाषित करते हैं. हालांकि, इस प्रवास में मजदूरों ने पाया कि वे जातिगत व्यवहारों से मुक्त हो सकते हैं और परदेश की भूमि पर उन्होंने जिस भारत का निर्माण किया, उसमें उन्होंने अपने समाज को संगठित करने वाले एक प्रमुख सामाजिक संबंध, जाति, के नियंत्रण को तोड़ कर "क्रांति" रच दी.

नॉयपाल का लेख उन रास्तों को उद्घाटित करता है जिसपर चलकर प्रवासी मजदूर अपनी संस्कृति और समाज का रूपांतरण करते हैं. यह रचनात्मक और क्रांतिकारी प्रक्रिया है. हालांकि, सभी क्रांतियों की तरह, इस क्रांति की भी इतनी सरल व्याख्या नहीं है. मजदूरों के प्रवास के कारण उपजे असंतोष और निरंतर संघर्ष को अश्विनी कुमार पंकज ने अपने उपन्यास '*माटी माटी अरकाटी*' में उजागर किया है. वे ''पहाडी कुलियों'' के इतिहास के विलोपन को सावधानीपूर्वक चिन्हित करते हैं और बताते हैं कि यह विलोपन कैसे पूर्व बगान-उपनिवेशों के राजनीतिक जीवन को अभी तक प्रभावित कर रहा है. इन विरोधाभासों का विश्लेषण करने की जरूरत है.

इस कांफ्रेंस का उदेश्य है विभिन्न क्षेत्रों और विधाओं में हुए कार्यों को एकसाथ लाना. यह मजदूरों के प्रवासन के साथ ऐतिहासिक और समकालीन समय, दोनों से जुड़े सांस्कृतिक व्यवहारों के मेकिंग और अनमेकिंग का पुनर्परीक्षण करेगा. मजदूरों का प्रवासन कैसे स्थापित विधाओं में रूपांतरित हो जाता है? कैसे वह नई विधाओं की रचना करता है? स्मृति और भूलने की क्रिया की क्या भूमिका होती है? किस प्रक्रिया से संस्कृति उद्योग प्रवासी मजदूरों के सांस्कृतिक व्यवहार को बिकाऊ माल में बदल देता है और फिर उन्हें ही बेच देता है और इस प्रक्रिया में न केवल उनके श्रम से बल्कि अभी तक अव्यवसायिक रही उनकी सांस्कृतिक कलाकृतियों से भी अतिरिक्त मूल्य संचित करता है?

क्या बगान या खनन या जहाजरानी या मौजूदा समय के दौर में वैश्विक निर्माण उद्योग में लगे मजदूरों को हमारे विश्लेषण के केन्द्र में रखकर संकरपन, बहुसंस्कृतिवाद, निर्वासन जैसी धारणाओं का पुनरावलोकन और उनकी पुनःअवधारणा संभव है? क्या ये मजदूर सांस्कृतिक व्यवहार की अभिव्यक्ति के नए तरीके तराश रहे हैं जिसका आम तौर से साहित्यिक अध्ययनों, सांस्कृतिक अध्ययनों और सामाजिक विज्ञान को उदभेदन करना है? ये ही कुछ प्रश्न हैं जिन्हें हम कांफ्रेंस में उठाना चाहते हैं.

कांफ्रेंस में निम्नलिखित विषयों, जो केवल संकेतक है और ये घोषित विषयवस्तु से आगे जा सकते हैं, पर आलेख प्रस्तुत किए जायेंगे:

1. प्रवसन में साहित्यिक विधा
2. प्रतिरोध, संगठन और परस्पर जुड़ाव की संस्कृति
3. स्मृति, क्षति और पहचान
4. मजदूर प्रवसन के माध्यम से भाषा और उसका विकास
5. मजदूर प्रवसन के माध्यम से सृजित संस्कृति का वृतांत क्रम

6. लिंग और यौनिकता

7. लोक-साहित्य के लेकर संस्कृति के व्यापक निर्माण तक

8. मजदूर और प्रवास का प्रतिनिधित्व

9. संस्कृति का संक्रमण एवं रूपांतरण

10. प्रवासी मजदूर और शहरी संस्कृति

11. प्रवासी और देशज संस्कृति

कृपया लगभग 250 शब्दों में अपने पेपर का सारांश इस मेल पर भेजें: mithilesh.kumar@tiss.edu और patnacentre@tiss.edu . सारांश भेजने की अंतिम तिथि 10 जनवरी 2018 है. जिन लेखकों का पेपर चुना जायेगा उन्हें 15 जनवरी तक सूचित कर दिया जायेगा. सम्पूर्ण पेपर भेजने की आखिरी तिथि 1 अप्रील 2018 है.

आलेख अंग्रेजी, हिन्दी या उर्दू में प्रस्तुत किए जा सकते हैं.

पोस्टर प्रदर्शन और वित्तचित्रों का स्वागत है. कलाकृतियों की एक प्रति रख ली जाएगी और केन्द्र के प्रवसन अभिलेखागार में सूचीबद्ध की जाएगी.

आयोजकः टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज **(**टीआइएसएस**)**, पटना

सम्मेलन संयोजक:- मिथिलेश कुमार, शोधार्थी, टीआइएसएस, पटना; शंकर दत्त, प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, पटना विश्वविद्यालय; और पुष्पेन्द्र, प्रोफेसर, टीआइएसएस, पटना.

दिनांकः 20-21 अप्रैल 2018. स्थानः टीआइएसएस**,** पटना